

# हिंदी में ऑनलाइन शोध की संभावनायें

डा. अनिता सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, गोविंद नगर, कानपुर

सार

तय करें कि विषय क्या है 'हार्ड रिसर्च', 'सॉफ्ट रिसर्च', या दोनों:-

'हार्ड' और 'सॉफ्ट' शोध में डेटा और सबूत की अलग-अलग अपेक्षाएं होती हैं। आपको अपनी खोज रणनीति को इंगित करने के लिए अपने विषय की कठोर या मुलायम प्रकृति को जानना चाहिए जहां यह सबसे विश्वसनीय शोध परिणाम प्रदान करेगा।

ए) 'हार्ड रिसर्च' वैज्ञानिक और उद्देश्य अनुसंधान का वर्णन करता है, जहां साबित तथ्यों, आंकड़ों, आंकड़ों, और मापनीय साक्ष्य बिल्कुल महत्वपूर्ण हैं। कड़ी मेहनत में, हर संसाधन की विश्वसनीयता तीव्र जांच का सामना करने में सक्षम होना चाहिए।

बी) 'सॉफ्ट रिसर्च' उन विषयों का वर्णन करता है जो अधिक व्यक्तिपरक, सांस्कृतिक और राय आधारित हैं। नरम शोध स्रोतों को पाठकों द्वारा कम जांच की जाएगी।

सी) संयुक्त मुलायम और कठिन शोध के लिए सबसे अधिक काम की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह हाइब्रिड विषय आपकी खोज आवश्यकताओं को बढ़ाता है। आपको केवल कठिन तथ्यों और आंकड़ों को खोजने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आपको अपना केस बनाने के लिए बहुत मजबूत राय के खिलाफ बहस करने की आवश्यकता होगी। राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था विषय हाइब्रिड शोध का सबसे बड़ा उदाहरण हैं।

यदि आप कड़ी मेहनत कर रहे हैं, तो यह सभी का सबसे महत्वपूर्ण कदम भी है, क्योंकि आपके संसाधनों को बाद में करीबी परीक्षा का सामना करना पड़ेगा।

1. लेखक / स्रोत, और प्रकाशन की तारीख पर ध्यान से विचार करें। क्या लेखक पेशेवर प्रमाण-पत्रों के साथ एक प्राधिकारी है, या कोई ऐसा व्यक्ति जो अपनी माल को परेशान कर रहा है और आपको एक पुस्तक बेचने की कोशिश कर रहा है? क्या पृष्ठ अवांछित है, या असामान्य रूप से पुराना है? क्या पृष्ठ का अपना डोमेन नाम है (उदाहरण के लिए [honda.com](http://honda.com), उदाहरण के लिए [gov.co.uk](http://gov.co.uk)), या क्या यह माइस्पेस में दफन किया गया कुछ गहरा और अस्पष्ट पृष्ठ है?
2. व्यक्तिगत वेब पृष्ठों, और किसी भी वाणिज्यिक पृष्ठ के बारे में संदिग्ध रहें, जो कमजोर, शौकिया प्रस्तुति है। वर्तनी त्रुटियों, व्याकरण त्रुटियों, खराब स्वरूपण, पक्ष में चीज विज्ञापन, बेटुका फोंट, बहुत अधिक चमकते इमोटिकॉन्स ... ये सभी लाल झंडे हैं कि लेखक गंभीर संसाधन नहीं हैं, और उनके प्रकाशन की गुणवत्ता परवाह नहीं करते हैं।
3. वैज्ञानिक या चिकित्सा पृष्ठों को प्रदर्शित करने वाले वैज्ञानिक या चिकित्सा पृष्ठों पर संदेह रखें। उदाहरण के लिए: यदि आप पशुचिकित्सक सलाह पर शोध कर रहे हैं, तो सावधान रहें यदि पशु चिकित्सक वेब पेज कुत्ते की दवा या पालतू भोजन के लिए आकर्षक विज्ञापन प्रदर्शित करता है। विज्ञापन संभवतः लेखक की सामग्री के पीछे ब्याज या छुपा एजेंडा का संघर्ष कर सकता है।
4. किसी भी ranting, overstating, अत्यधिक सकारात्मक, या अत्यधिक नकारात्मक टिप्पणी के बारे में संदिग्ध रहें। अगर लेखक क्रांतिकारी और रोने पर जोर देते हैं, या इसके विपरीत अत्यधिक प्रशंसा करते हैं, तो यह एक लाल झंडा हो सकता है कि लेखन के पीछे बेईमानी और धोखाधड़ी की प्रेरणा है।

## परिचय

गुणात्मक अनुसंधान (Qualitative research) कई अलग शैक्षणिक विषयों में विनियोजित, पारंपरिक रूप से सामाजिक विज्ञान, साथ ही बाज़ार अनुसंधान और अन्य संदर्भों में जांच की एक विधि है।<sup>[1]</sup> गुणात्मक शोधकर्ताओं का उद्देश्य मानवीय व्यवहार और ऐसे व्यवहार को शासित करने वाले कारणों को गहराई से समझना है। गुणात्मक विधि निर्णय के न केवल क्या, कहां, कब की छानबीन करती है, बल्कि क्यों और कैसे को खोजती है। इसलिए, बड़े नमूनों की बजाय अक्सर छोटे पर संकेंद्रित नमूनों की ज़रूरत होती है।<sup>[1]</sup>

गुणात्मक विधियां केवल विशिष्ट अध्ययन किए गए मामलों पर जानकारी उत्पन्न करती हैं और इसके अतिरिक्त कोई भी सामान्य निष्कर्ष केवल परिकल्पनाएं (सूचनात्मक अनुमान) हैं। इस तरह की परिकल्पनाओं में सटीकता के सत्यापन के लिए मात्रात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जा सकता है।

सामाजिक उपयोगिता से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा अन्य संबद्ध क्षेत्रों में मौलिक लेखन का विचार-वैभव स्वागत करता है। सामाजिक अनुसंधानों के लिए जर्नल की उपयोगिता इसके बहु-आयामी प्रारूप में निहित है। अधिकाधिक ज्ञानार्थियों को इस प्रकाशन का लाभ मिले यह 'विचार-वैभव' का लक्ष्य है। जर्नल सामाजिक शोध से जुड़े कार्मिकों तथा शोधकर्ताओं के मौलिक शोध, मूल अवधारणाओं पर गहन संतुलित चिन्तन तथा सामाजिक महत्त्व की ज्वलंत समस्याओं/मुद्दों पर विचार-विमर्श प्रस्तुत करने और अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करता है।<sup>[2,3]</sup>

अब आप किस तर्क का समर्थन करते हैं, उस पर अंतिम निर्णय लें।

कुछ घंटे शोध करने के बाद, आपकी प्रारंभिक राय बदल गई हो सकती है। हो सकता है कि आप राहत प्राप्त कर सकें, हो सकता है कि आप अधिक डर जाएं, शायद आपने कुछ सीखा है और अपना दिमाग खोला है। जो भी हो, यदि आप अपने प्रोफेसर के लिए एक रिपोर्ट या थीसिस प्रकाशित करने वाले हैं तो आपको एक सूचित राय की आवश्यकता होगी।

यदि आपकी कोई नई राय है, तो आपको अपनी नई राय और थीसिस स्टेटमेंट का समर्थन करने वाले तथ्यों को एकत्रित करने के लिए अपने शोध को फिर से शुरू करना पड़ सकता है (या अपने मौजूदा शोध बुकमार्क्स को फिर से चलाएं)

### अवलोकन

गुणात्मक शोधकर्ता डेटा संग्रहण के लिए कई अलग दृष्टिकोण अपना सकते हैं, जैसे कि बुनियादी सिद्धांत अभ्यास, आख्यान, कहानी सुनाना, शास्त्रीय नृवंशविज्ञान या प्रतिच्छाया। कार्य-अनुसंधान या कार्यकर्ता-नेटवर्क सिद्धांत जैसे अन्य सुव्यवस्थित दृष्टिकोण में भी गुणात्मक विधियां शिथिल रूप से मौजूद रहती हैं। संग्रहित डेटा प्रारूप में साक्षात्कार और सामूहिक चर्चाएं, प्रेक्षण और प्रतिबिंबित फील्ड नोट्स, विभिन्न पाठ, चित्र और अन्य सामग्री शामिल कर सकते हैं।[4]

गुणात्मक अनुसंधान परिणामों को व्यवस्थित तथा रिपोर्ट करने के लिए अक्सर डेटा को पैटर्न में प्राथमिक आधार के रूप में वर्गीकृत करता है। गुणात्मक शोधकर्ता आम तौर पर सूचना एकत्रित करने के लिए निम्न पद्धतियों का सहारा लेते हैं: सहभागी प्रेक्षण, गैर सहभागी प्रेक्षण, फील्ड नोट्स, प्रतिक्रियात्मक पत्रिकाएं, संरचित साक्षात्कार, अर्द्ध संरचित साक्षात्कार, असंरचित साक्षात्कार और दस्तावेजों व सामग्रियों का विश्लेषण

सहभागिता और प्रेक्षण के तरीके सेटिंग दर सेटिंग व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं। सहभागी प्रेक्षण प्रतिक्रियात्मक सीख की रणनीति है, न कि प्रेक्षण की एकल पद्धति। सहभागी प्रेक्षण में [5] शोधकर्ता आम तौर पर एक संस्कृति, समूह, या सेटिंग के सदस्य बनते हैं और उस सेटिंग के अनुरूप भूमिका अपनाते हैं। ऐसा करने का उद्देश्य शोधकर्ता को संस्कृति की प्रथाएं, प्रयोजन और भावनाओं के प्रति निकटस्थ अंतर्दृष्टि का लाभ उपलब्ध कराना है। यह तर्क दिया जाता है कि संस्कृति के अनुभवों को समझने के प्रति शोधकर्ताओं की क्षमता में अवरोध उत्पन्न हो सकता है अगर वे बिना भाग लिए निरीक्षण करते हैं।

कुछ विशिष्ट गुणात्मक विधियां हैं फोकस समूहों का उपयोग और प्रमुख सूचक साक्षात्कार। फोकस समूह तकनीक में शामिल होता है एक मध्यस्थ जो किसी विशिष्ट विषय पर चयनित व्यक्तियों के बीच एक छोटी चर्चा को आयोजित करता है। यह बाजार अनुसंधान और प्रयोक्ता/कार्यकर्ताओं के साथ नई पहल के परीक्षण की विशेष रूप से लोकप्रिय विधि है।

गुणात्मक अनुसंधान का एक पारंपरिक और विशेष स्वरूप संज्ञानात्मक परीक्षण या प्रायोगिक परीक्षण कहलाता है जिसका उपयोग मात्रात्मक सर्वेक्षण मर्दों के विकास के लिए किया जाता है। सर्वेक्षण मर्दों का अध्ययन प्रतिभागियों पर प्रयोग किया जाता है ताकि मर्दों की विश्वसनीयता और वैधता की जांच की जा सके।[6]

### अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले गुणात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण में निम्नलिखित शामिल हैं:

1. संस्कृतियों की जांच के लिए प्रयुक्त नृवंशविज्ञान अनुसंधान, जहां सिद्धांत के विकास में मदद के उद्देश्य से डेटा संग्रहित और वर्णित किया जाता है। यह विधि "जाति-सुव्यवस्था" या "लोगों की कार्यप्रणाली" भी कहलाती है। प्रयोज्य नृवंशविज्ञान शोध का एक उदाहरण है, एक विशेष संस्कृति का अध्ययन और उनके सांस्कृतिक ढांचे में किसी एक विशेष बीमारी की भूमिका के बारे में उनकी समझ।
2. महत्वपूर्ण सामाजिक अनुसंधान शोधकर्ताओं द्वारा यह समझने के लिए प्रयोग किया जाता है कि कैसे लोगों के बीच संप्रेषण और प्रतीकात्मक अर्थों का विकास होता है।
3. नैतिक जांच नैतिक समस्याओं का एक बौद्धिक विश्लेषण है। इसमें बाध्यता, अधिकार, कर्तव्य, सही और गलत, चुनाव आदि के संदर्भ में नैतिकता का अध्ययन शामिल है।
4. मूलभूत अनुसंधान, विज्ञान के लिए नींव की जांच, मान्यताओं का विश्लेषण करता है और यह निर्दिष्ट करने के लिए तरीकों को विकसित करता है कि नई सूचना के प्रकाश में किस तरह ज्ञान का आधार बदलना चाहिए।
5. ऐतिहासिक अनुसंधान, वर्तमान स्थिति के संदर्भ में विगत और वर्तमान घटनाओं की चर्चा को अनुमत करता है और लोगों को सोचने और वर्तमान मुद्दों और समस्याओं के संभाव्य समाधान उपलब्ध कराने का मौक़ा देता है। ऐतिहासिक अनुसंधान हमारे ऐसे सवालियों का जवाब देने में मदद करता है: हम कहां से आए हैं, हम कहां पर हैं, हम अब क्या हैं और हम किस दिशा में जा रहे हैं?
6. बुनियादी सिद्धांत एक आगमनात्मक प्रकार का अनुसंधान है, जो उन प्रेक्षणों या डेटा पर आधारित या "स्थापित" है जिनसे उसका विकास हुआ है; वह विविध डेटा स्रोतों का इस्तेमाल करता है जिनमें शामिल हैं मात्रात्मक डेटा, अभिलेखों की समीक्षा, साक्षात्कार, प्रेक्षण और सर्वेक्षण।
7. घटना-क्रिया-विज्ञान, अन्वेषणाधीन व्यक्तियों द्वारा परिकल्पित किसी घटना की "स्वानुभूतिमूलक वास्तविकता" को वर्णित करता है; यह घटना का एक अध्ययन है।
8. दार्शनिक अनुसंधान, क्षेत्र विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन या व्यवसाय के किसी विशिष्ट क्षेत्र की सीमाओं के भीतर आयोजित किया जाता है, अध्ययन के किसी भी क्षेत्र में सबसे योग्य व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त बौद्धिक विश्लेषण का उपयोग, ताकि

परिभाषाओं को स्पष्ट कर सकें, नैतिकता को पहचान सकें, या अपने अध्ययन के क्षेत्र में किसी मुद्दे से संबंधित मूल्यवान निर्णय ले सकें।

## विचार – विमर्श

### व्याख्यात्मक तकनीक

गुणात्मक डेटा का सर्व सामान्य विश्लेषण पर्यवेक्षक प्रभाव है। अर्थात्, विशेषज्ञ या दर्शक प्रेक्षक डेटा की जांच करते हैं, एक धारणा बनाने के ज़रिए उसे समझते हैं और अपने प्रभाव को संरचनात्मक और कभी-कभी मात्रात्मक रूप में रिपोर्ट करते हैं।

### कोडिंग

कोडिंग इस अर्थ में एक व्याख्यात्मक तकनीक है कि दोनों डेटा को सुव्यवस्थित करते हैं और कुछ मात्रात्मक पद्धतियों में उन निर्वचनों को प्रवर्तित करने के लिए साधन उपलब्ध कराते हैं। अधिकांश कोडिंग में विश्लेषक को डेटा के पठन और उसके खंडों को सीमांकित करना पड़ता है। प्रत्येक खंड पर एक "कोड" का लेबल लगा होता है - आम तौर पर एक शब्द या छोटा वाक्यांश, जो यह जताता है कि कैसे संबद्ध डेटा खंड अनुसंधान के उद्देश्यों को सूचित करते हैं। जब कोडिंग पूरा हो जाता है, विश्लेषक निम्न के मिश्रण के माध्यम से रिपोर्ट तैयार करता है: कोड के प्रचलन का सारांश, विभिन्न मूल स्रोत/संदर्भों के पार संबंधित कोड में समानताओं और विभिन्नताओं पर चर्चा, या एक या अधिक कोडों के बीच संबंध की तुलना।[7]

कुछ उच्च संरचना वाले गुणात्मक डेटा (उदा., सर्वेक्षणों से विवृतांत प्रतिक्रियाएं या दृढ़तापूर्वक परिभाषित साक्षात्कार प्रश्न) आम तौर पर सामग्री के अतिरिक्त विभाजन के बिना ही कोडित किए जाते हैं। इन मामलों में, कोड को अक्सर डेटा की ऊपरी परत के रूप में लागू किया जाता है। इन कोडों के मात्रात्मक विश्लेषण आम तौर पर इस प्रकार के गुणात्मक डेटा के लिए कैप्टोन विश्लेषणात्मक कदम है।

कभी-कभी समकालीन गुणात्मक डेटा विश्लेषण कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा समर्थित होते हैं। ये प्रोग्राम कोडिंग के व्याख्यात्मक स्वभाव को नहीं निकालते, बल्कि डाटा संग्रहण/पुनर्प्राप्ति में विश्लेषक की दक्षता को बढ़ाने और डेटा पर कोड लागू करने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। कई प्रोग्राम संपादन और कोडिंग के संशोधन क्षमता की पेशकश करते हैं, जो काम साझा करने, सहकर्मी समीक्षा और डेटा के पुनरावर्ती परीक्षण को अनुमत करते हैं।[8]

कोडिंग विधि की एक लगातार होने वाली आलोचना है कि यह गुणात्मक डेटा को मात्रात्मक डेटा में बदलने का प्रयास करता है, जिससे डेटा की विविधता, समृद्धि और व्यक्तिगत स्वभाव समाप्त हो जाता है। विश्लेषक पूरी तरह अपने कोड की परिभाषा के प्रतिपादन और उन्हें अंतर्निहित डेटा के साथ बखूबी जोड़ते हुए, कोडों की मात्र सूची से अनुपस्थित समृद्धि को वापस लाकर इस आलोचना का जवाब देते हैं।

### प्रत्यावर्ती पृथक्करण

कुछ गुणात्मक डेटासेटों का बिना कोडिंग के विश्लेषण किया जाता है। यहां एक सामान्य विधि है प्रत्यावर्ती पृथक्करण, जहां डेटासेटों का सारांश निकाला जाता है और फिर उनको संक्षिप्त किया जाता है। अंतिम परिणाम एक अधिक सुसंबद्ध सार होता है जिन्हें आसवन के पूर्ववर्ती चरणों के बिना सटीक रूप से पहचानना मुश्किल होता है।

प्रत्यावर्ती पृथक्करण की एक लगातार की जाने वाली आलोचना यह है कि अंतिम निष्कर्ष अंतर्निहित डेटा से कई गुणा हट कर होता है। हालांकि यह सच है कि खराब प्रारंभिक सारांश निश्चित रूप से एक त्रुटिपूर्ण अंतिम रिपोर्ट उत्पन्न करेंगे, पर गुणात्मक विश्लेषक इस आलोचना का जवाब दे सकते हैं। वे कोडन विधि का उपयोग करने वाले लोगों की तरह, प्रत्येक सारांश चरण के पीछे तर्क के दस्तावेजीकरण द्वारा, जहां बयान शामिल हों डेटा से और जहां बयान शामिल ना हों, मध्यवर्ती सारांशों से उदाहरणों का हवाला देते हुए ऐसा करते हैं।[9,10]

### यांत्रिक तकनीक

कुछ तकनीक गुणात्मक डेटा के विशाल सेटों को स्कैन करते हुए तथा छांटते हुए कंप्यूटरों के उत्तोलन पर निर्भर करते हैं। अपने सर्वाधिक बुनियादी स्तर पर, यांत्रिक तकनीक डेटा के भीतर शब्द, वाक्यांश, या टोकन के संयोग की गिनती पर निर्भर होते हैं। अक्सर सामग्री विश्लेषण के रूप में संदर्भित, इन तकनीकों के आउटपुट कई उन्नत सांख्यिकीय विश्लेषणों के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

यांत्रिक तकनीक विशेष रूप से कुछ परिदृश्यों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। एक ऐसा परिदृश्य ऐसे विशाल डेटासेटों के लिए है जिसका प्रभावी ढंग से विश्लेषण मानव के लिए बस संभव नहीं, या उनमें आवेष्टित सूचना के मूल्य की तुलना में उनका विश्लेषण लागत की दृष्टि से निषेधात्मक है। एक अन्य परिदृश्य है जब एक डाटासेट का मुख्य मूल्य उस सीमा तक है जहां वह "लाल झंडा" (उदा., चिकित्सीय परीक्षण में रोगियों के लंबे जर्नल डेटासेट के अंतर्गत कुछ प्रतिकूल घटनाओं की रिपोर्ट के लिए खोज) या "हरा झंडा" (उदा., बाज़ार के उत्पादों की सकारात्मक समीक्षा में अपने ब्रांड का उल्लेख खोजना) लिए हुए है।

यांत्रिक तकनीक की एक सतत आलोचना मानव अनुवादक का अभाव है। और जहां इन तरीकों के स्वामी कुछ मानवीय निर्णयों की नकल करने के लिए अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर लिखने में सक्षम हैं, "विश्लेषण" का अधिकांश हिस्सा बिना मानव के है। विश्लेषक अपने तरीकों के सापेक्ष मूल्य को या तो

क) डेटा के विश्लेषण के लिए मानव टीम को काम पर रखने और उनके प्रशिक्षण द्वारा या ख) किसी कार्रवाई योग्य पिंड को अनदेखा छोड़ते हुए, डेटा को अछूता जाने देते हुए, प्रमाणन द्वारा प्रतिक्रिया जताते हैं।

#### परिणाम

समकालीन गुणात्मक अनुसंधान अन्य बातों के साथ-साथ वैधता, नियंत्रण, डेटा विश्लेषण, सत्तामीमांसा और ज्ञान-मीमांसा की संकल्पनात्मक और वैचारिक चिंताओं को प्रभावित करने वाले कई अलग निदर्शनों से किया जाता है। पिछले 10 वर्षों में आयोजित शोध अधिक व्याख्यात्मक, आधुनिकोत्तर और आलोचनात्मक व्यवहारों के प्रति विशिष्ट झुकाव लिए हैं। समकालीन गुणात्मक अनुसंधान के पांच प्रमुख निदर्शनों की पहचान करते हैं: निश्चयात्मक, निश्चयोत्तर, आलोचनात्मक सिद्धांत, रचनात्मक और सहभागी/सहकारी<sup>[7]</sup>। गुबा और लिनकन द्वारा सूचीबद्ध प्रत्येक निदर्शन, मूल्य-मीमांसा, अभिप्रेत अनुसंधान कार्रवाई, अनुसंधान प्रक्रिया/परिणामों का नियंत्रण, सत्य और ज्ञान की नींव के साथ संबंध, वैधता (नीचे देखें), पाठ प्रतिनिधित्व और शोधकर्ता/प्रतिभागियों की आवाज़ और अन्य निदर्शनों के साथ अनुरूपता के स्वयंसिद्ध मतभेदों द्वारा अभिलक्षित हैं।

विशेष रूप से, स्वयंसिद्धि में वह सीमा शामिल हैं जहां तक निदर्शनात्मक चिंताएं "उन तरीकों से एक दूसरे के प्रति बाद में ठीक बैठ गईं जा सकती हैं, जो दोनों के एक साथ अभ्यास को संभव कर सकें"। निश्चयात्मक और निश्चयोत्तर निदर्शन स्वयंसिद्ध मान्यताओं को साझा करते हैं, लेकिन बड़े पैमाने पर आलोचनात्मक, रचनावादी और सहभागी निदर्शनों के साथ अतुलनीय हैं। इसी तरह, आलोचनात्मक, रचनावादी और सहभागी निदर्शन कुछ मुद्दों पर स्वयंसिद्ध हैं (जैसे, अभिप्रेत कार्रवाई और पाठ का प्रतिनिधित्व)। गुणात्मक अनुसंधान का एक केंद्रीय मुद्दा है वैधता (जो विश्वसनीयता और/या निर्भरता के रूप में भी जाना जाता है)। वैधता को स्थापित करने के कई अलग तरीके हैं, जिनमें शामिल हैं: सदस्य जांच, साक्षात्कारकर्ता पुष्टीकरण, सहकर्मी से जानकारी लेना, लंबे समय तक विनियोजन, नकारात्मक मामला विश्लेषण, लेखांकनक्षमता, पुष्टीकरणक्षमता, बराबर समझना और संतुलन। इनमें से अधिकांश तरीकों को वर्णित किया है।<sup>[11]</sup>

#### निष्कर्ष

व्यापक अर्थ में अनुसन्धान (Research) किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना' या 'विधिवत गवेषणा' करना होता है। वैज्ञानिक अनुसन्धान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुरानी वस्तुओं एवं सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण करना, जिससे कि नए तथ्य प्राप्त हो सकें, उसे शोध कहते हैं।

शोध उस प्रक्रिया अथवा कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेक बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है।

- अनुसंधान (Research) को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। ज्ञान की किसी भी शाखा में नवीन तथ्यों की खोज के लिए सावधानीपूर्वक किए गए अन्वेषण या जांच-पड़ताल को शोध की संज्ञा दी जाती है। (एडवॉर्ड्स लर्नर डिक्शनरी ऑफ करेंट इंग्लिश)

- रैडमैन और मोरी ने अपनी पुस्तक "द रोमांस ऑफ रिसर्च" में शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध कहते हैं।

- लुण्डबर्ग ने शोध को परिभाषित करते हुए लिखा है कि अवलोकित सामग्री का संभावित वर्गीकरण, साधारणीकरण एवं सत्यापन करते हुए पर्याप्त कर्म विषयक और व्यवस्थित पद्धति है।<sup>[12]</sup>

शोध की परिभाषा -किसी समस्या के व्यवस्थित अध्ययन करने या किसी समस्या से सम्बन्धित ज्ञान का बढ़ाने के निष्पक्ष प्रयास को शोध कहा जा सकता है।

शोध की परिभाषा - के द्वारा शोध की दी गयी परिभाषा अधिक समग्र, स्पष्ट तथा संतोषजनक है। उनके अनुसार

वैज्ञानिक शोध, प्राकृतिक घटनाओं के बीच अनुमानित सम्बन्धों की खोज हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का व्यवस्थित, नियंत्रित आनुभविक तथा आलोचनात्मक अनुसंधान है।

स्पष्ट है कि विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने शोध शब्द को विभिन्न रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है। सभी परिभाषायें अपने आप में संतोषजनक तथा एक-दूसरे की पूरक हैं।<sup>[13]</sup>

पाश्चात्य शोध परम्परा विशेषज्ञता (Specialization) आधारित है। ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ता हुआ शोधार्थी अपने विषय क्षेत्र में विशेषज्ञता और पुनः अति विशेषज्ञता प्राप्त करता है। शोध समस्या के समाधान की दृष्टि से यह अत्यन्त उपादेय है। भारतीय ज्ञान साहित्य की अविच्छिन्न परंपरा के प्रमाण से हम यह कह सकते हैं कि शोध की भारतीय परंपरा, जगत के अंतिम सत्य की ओर ले जाती है। अंतिम सत्य की ओर जाते ही तथ्य गौण होने लगते हैं और निष्कर्ष प्रमुख। तथ्य उसे समकालीन से जोड़ते हैं और निष्कर्ष, देश काल की सीमा को तोड़ते हुए समाज के अनुभव विवेक में जुड़ते जाते हैं। भारतीय वाङ्मय का सत्य एक ओर जहाँ विशिष्ट सत्य का प्रतिपादन करता है वहीं दूसरी ओर सामान्य सत्य को भी अभिव्यक्ति करता है। सामान्य सत्य का प्रतिपादन सर्वदा भाष्य की अपेक्षा रखता है। यही कारण है कि भारतीय वाङ्मय में विवेचित अधिकांश तथ्यों की वस्तुगत सत्ता पर सदैव प्रश्नचिह्न लगते हैं। वे अनुभव की एक धाती हैं। तथ्यों की वस्तुगत सत्ता से दूरी उसे थोड़ी रहस्यात्मक बनाती है, भ्रम की संभावना बनी रहती है। उसके निहितार्थ तक पहुँचने की लिए प्रज्ञा की आवश्यकता है। सम्पूर्णता का बोध कराने वाली यह व्यापक दृष्टि एक प्रकार की वैश्विक दृष्टि

(Holistic Approach) है। मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषयों ही नहीं अपितु समाज विज्ञान एवं प्राकृतिक विज्ञानों के अन्तरावलम्बन से वर्तमान ज्ञान तन्त्र में एक प्रकार के वैश्विक दृष्टि का प्रादुर्भाव होने लगा है, जिसकी सम्प्रति आवश्यकता प्रतीत होती रही है।[14]

### संदर्भ

1. डॉ. उदयभानु, सिंह (1959). हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध (प्रथम संस्करण). दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ° 3. अभिगमन तिथि 21 अक्टूबर 2021.
2. डॉ. उदयभानु, सिंह (1959). हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध (प्रथम संस्करण). दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ° 4. अभिगमन तिथि 21 अक्टूबर 2021.
3. डॉ. उदयभानु, सिंह (1959). हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध (प्रथम संस्करण). दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ° 4. अभिगमन तिथि 21 अक्टूबर 2021.
4. डॉ. उदयभानु, सिंह (1959). हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध (प्रथम संस्करण). दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ° 4. अभिगमन तिथि 21 अक्टूबर 2021.
5. डेनज़िन, नॉर्मन के. और लिंकन, युवोना एस.(सं.). (2005). द सेज हैंडबुक ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च (तीसरा सं.). थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-2757-3
6. टेलर, 1998
7. लोसेक, डोनिलीन आर. और काहिल, स्पेन्सर ई. (2007). "पब्लिशिंग कालिटेटिव मैनुस्क्रिप्ट्स: लेसन्स लर्न्ड". सी. सील, जी. गोबो, जे.एफ़. गुब्रियम और डी.सिल्वरमैन (सं.), कालिटेटिव रिसर्च प्रैक्टिस: कन्साइस पेपरबैक एडिशन, पृ. 491-506. लंदन: सेज. ISBN 978-1-7619-4776-9
8. मार्शल, कैथरीन और रोसमैन, ग्रेसोन बी. (1998). डिजाइनिंग कालिटेटिव रिसर्च . थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-1340-8
9. लिंडलोफ़, टी.आर. और टेलर, बी.सी. (2002) कालिटेटिव कम्प्यूनिकेशन रिसर्च मेथड्स: दूसरा संस्करण. थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज पब्लिकेशन्स, इंक ISBN 0-7619-2493-0
10. गुबा, ई.जी. और लिंकन, वाई.एस. (2005). "पैराडिगमैटिक कॉन्ट्रोवर्सिस, कॉन्ट्रिडिक्शन्स, एंड एमर्जिंग इन्फ्लुएंसस" एन.के. डेन्ज़िन और वाई.एस. लिंकन (सं.) द सेज हैंडबुक ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च (तीसरा संस्करण), पृ. 191-215. थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-2757-3
11. गुबा, ई.जी. और लिंकन, वाई.एस. (2005). "पैराडिगमैटिक कॉन्ट्रोवर्सिस, कॉन्ट्रोवर्सिस, कॉन्ट्रिडिक्शन्स, एंड एमर्जिंग इन्फ्लुएंसस" एन.के. डेन्ज़िन और वाई.एस. लिंकन (सं.) द सेज हैंडबुक ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च (तीसरा संस्करण), पृ. 191-215. थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-2757-3
12. गुबा, ई.जी. और लिंकन, वाई.एस. (2005). "पैराडिगमैटिक कॉन्ट्रोवर्सिस, कॉन्ट्रोवर्सिस, कॉन्ट्रिडिक्शन्स, एंड एमर्जिंग इन्फ्लुएंसस" (पृ. 200). एन.के.डेन्ज़िन और वाई.एस. लिंकन (सं.) द सेज हैंडबुक ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च (तीसरा संस्करण), पृ. 191-215. थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-2757-3
13. लिंकन वाई. और गुबा ई.जी. (1985) नैचुरलिस्ट इन्काइरी, सेज पब्लिकेशन्स, न्युबरी पार्क, सी.ए.
14. डेन्ज़िन, नॉर्मन के. और लिंकन, युवोना एस. (2005). "इंट्रोडक्शन: द डिसिप्लीन एंड प्रैक्टिस ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च". एन.के.डेन्ज़िन और वाई.एस. लिंकन (सं.) द सेज हैंडबुक ऑफ़ कालिटेटिव रिसर्च (तीसरा संस्करण), पृ. 1-33. थाउसंड ओक्स, सी.ए.: सेज. ISBN 0-7619-2757-3